

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत-खिलभाग हरिवंश

(श्रीहरिवंशपुराण)

हिंदी-टीकासहित



टीकाकार—

पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

PDF Creation and Uploading by:
Hari Parshad Das (HPD)
on 04 September 2014.

सटीक महाभारत-खिलभाग हरिवंशकी सम्पूर्ण विषय-सूची

(हरिवंशपर्व)

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१-मङ्गलाचरण, शौनक-उग्रभवा-संवाद, वृष्णि- वंशियोंका विस्तृत चरित्र मनुके लिये जनमेजय- की प्रार्थना और आदिदृष्टिका वर्णन	१		१५-सूर्यवंशका वर्णन ...	५१	
२-त्वायम्भुव मनुके वंश और दक्ष प्रजापतिकी उत्पत्तिकी वर्णन	५		१६-आदिकल्प-जनमेजयद्वारा पिताका आद्व तथा पितृ- स्वरूपनिर्णयसम्बन्धी प्रश्न, शन्तनुका अपने आद्वमें स्वयं हाथ बढ़ाकर भीष्मसे पिण्ड माँगना ५५	५५	
३-दक्ष प्रजापतिद्वारा दृष्टि-विस्तार, नारदजीका दक्षके पुत्रोंको विरक्त कर देना, दक्षकी साठ कन्याओं और उनकी संततिका वर्णन	९		१७-पितृकल्प-भीष्म-मार्कण्डेय-संवाद और मार्कण्डेय- जीके साथ सनत्कुमारजीकी बातचीत	५९	
४-पृथुका उपाख्यान-राज्यवितरण और दिक्पालों- की प्रतिष्ठा	१८		१८-पितृकल्प-मार्कण्डेय-सनत्कुमार-संवादमें पितरोंके गण, लोक, शक्ति और कन्याओंका वर्णन तथा पितरोंके प्रभावको देखनेके लिये मार्कण्डेयजीको दिव्य दृष्टिकी प्राप्ति ...	६१	
५-पृथुका उपाख्यान-वेनका अत्याचार करके नष्ट होना और पृथुका जन्म तथा चरित्र ...	२०		१९-पितृकल्प-भरद्वाजके पुत्रोंकी कथा, योगभ्रष्ट पुरुषोंकी गति, योगसिद्धिके अधिकारी पुरुषोंके लक्षण तथा मार्कण्डेय-सनत्कुमार-संवादकी समाप्ति	६७	
६-पृथुका उपाख्यान-पृथ्वीका पृथुकी पुत्री बनकर अनेक प्रकारके दूष देना तथा अनेक पात्रों एवं हुहनेवालोंका वर्णन ...	२४		२०-पितृकल्प-ब्रह्मदत्त और उग्रायुधके वंश तथा पूजनीया चिडियाद्वारा शुक्रनीतिका वर्णन ...	६८	
७-मन्वन्तर, मनु, देवता और ऋषियोंका पृथक्- पृथक् वर्णन	२८		२१-पितृकल्प-मार्कण्डेयजी द्वारा आद्वकी महिमा- का वर्णन, आद्वके फलसे कौशिक-पुत्रोंको उत्तम जन्मकी प्राप्ति	७७	
८-चारों युगों, मन्वन्तरों और ब्रह्माजीके दिन एवं वर्षका मान ...	३३		२२-पितृकल्प-शुचिवाक् पक्षीका स्वतन्त्र आदि तीन पक्षियोंको शाप देना, सुमना पक्षीका अनुग्रहपूर्वक उन्हें शापसे मुक्त करना	८०	
९-वैवस्वत मनु, यम, यमी (यमुना), अश्विनी- कुमारों एवं शनैश्वरकी उत्पत्ति ...	३६		२३-हंसोंका काम्पिल्यनगरमें ब्रह्मदत्त आदिके रूपमें उत्पन्न होना और चार हंसोंका अपने पितासे आशा लेकर मुक्त हो जाना	८९	
१०-वैवस्वत मनुके वंशजोंका वर्णन और पुरुखाकी उत्पत्ति	४०		२४-विभ्राजका ब्रह्मदत्तका पुत्र बनकर उत्पन्न होना, रानी संततिका ब्रह्मदत्तसे रुठना, एक ब्राह्मणके कहे हुए श्लोकोंसे ब्रह्मदत्त, पाञ्चाल्य और कण्हरीकको अपने पूर्वजन्मका ज्ञान होना तथा ब्रह्मदत्त आदिका तप करके मुक्त हो जाना	८३	
११-धुन्धुमारकी कथा	४३				
१२-धुन्धुमारके वंशका वर्णन और गालवकी उत्पत्ति	४७				
१३-त्रिशङ्कुके चरित्रका वर्णन तथा उनके वंशमें हरिश्चन्द्र आदिका उत्पन्न होना ...	४८				
१४-सगरकी उत्पत्ति और चरित्र तथा सगर-पुत्रोंके उद्योगसे समुद्रका 'सागर' होना	५१				

- २५-चन्द्रमाकी उत्पत्ति और राजस्य यद्य, देवासुर-
संग्राम तथा बुधकी उत्पत्ति *** ८६
- २६-महाराज पुरुरवाके चरित्र और वंशका वर्णन,
राजा पुरुरवाका जेताग्निकी रचना करना और
गन्धर्वोंके लोकमें जाना *** ८९
- २७-पुरुरवाके द्वितीय पुत्र अमावसुके वंशका वर्णन,
विश्वामित्र और परशुरामकी उत्पत्ति *** ९२
- २८-राजा रजि और उनके पुत्रोंका चरित्र, इन्द्रका
अपने स्थानसे भ्रष्ट होकर पुनः उसपर प्रतिष्ठित
होना *** ९६
- २९-अग्नेनाके वंशका वर्णन, धन्वन्तरिका काशिराज
धन्वके यहाँ पुत्ररूपमें अवतार, दिवोदासके राज्य-
कालमें भगवान् शिवकी आशसे गणेश्वर
निकुम्भके द्वारा वाराणसीको जनशून्य बनानेका
प्रयत्न, वहाँ शिव और पार्वतीका निवास,
दिवोदासका वाराणसीपर अधिकार और अल्क-
की प्रशंसा *** ९९
- ३०-नहुष एवं ययातिके वंशका वर्णन तथा ययातिका
चरित्र *** १०४
- ३१-पुरूकी वंशपरम्पराका वर्णन *** १०८
- ३२-पुरूके वंशके अन्तर्गत ऋचेयुकी वंशपरम्परा—
अजमीढवंश, पाञ्चाल एवं सोमकवंश, कौरववंश
तथा तुर्वशु दुह्यु और अनुकी संततिका वर्णन *** १११
- ३३-यदुवंशका वर्णन, कार्तवीर्यकी उत्पत्ति एवं
चरित्र तथा पाँचों ययाति-पुत्रोंके वंश-वर्णनके
भवणकी महिमा *** ११७
- ३४-शुद्धिवंशका वर्णन-अक्रूर, वसुदेव, कुन्ती,
सात्यकि, उद्धव, चारुदेवा, एकलव्य आदिका
परिचय *** १२१
- ३५-श्रीकृष्णका अवतार लेना, श्रीकृष्णके अन्य
भार्गवहिनों और कुटुम्बियोंका वर्णन तथा काल-
यवनकी उत्पत्ति *** १२४
- ३६-क्रोष्टाके वंशका वर्णन, पुरोहितके गोत्रसे क्षत्रियों-
के गोत्रका बदल जाना *** १२६
- ३७-बभ्रुवंशका वर्णन *** १२८
- ३८-भगवान् के वंशका वर्णन और स्वयन्तकमणिकी
कथा *** १३१
- ३९-स्वयन्तकमणिके कारण प्रसेन, सत्राजित् और
शतघन्वाका भार जाना, बलदेवजीका दुर्योधनको
गदा-विद्या सिखाना, अक्रूरजीका श्रीकृष्णको
मणि देना और श्रीकृष्णका पुनः अक्रूरको मणि
लौटा देना *** १३५
- ४०-जनमेजयका भगवान् के वराह, नृसिंह, परशु-
राम, श्रीकृष्ण आदि अवतारोंका रहस्य पूछना *** १३८
- ४१-भगवान् विष्णुके वाराह, नृसिंह, वामन, वत्साधेय,
परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, व्यास तथा कल्कि-
अवतारोंकी संक्षिप्त कथा *** १४५
- ४२-भगवान् विष्णुके ईश्वरत्वका वर्णन एवं अद्भुत
तारकामय संग्रामकी कथा *** १५१
- ४३-देवताओंके साथ युद्धके लिये उद्यत हुई दैत्य-
सेनाका वर्णन *** १५९
- ४४-आश्चर्यतारकामय संग्राममें देवसेनाकी युद्धके
लिये तैयारी *** १६१
- ४५-देवासुर-संग्राम एवं और्व अग्निनी उत्पत्ति १६५
- ४६-इन्द्रद्वारा चन्द्रमाकी स्तुति, चन्द्रदेव और वरुण-
देवके द्वारा दैत्य-सेनाका संहार, मयदानवद्वारा
मायाका प्रयोग, पवन और अग्निदेवका दैत्य-सेना-
के साथ संग्राम और कालनेमिका रणमें आगमन १७०
- ४७-कालनेमिका युद्ध और प्रभाव *** १७५
- ४८-कालनेमि और भगवान् विष्णुका संवाद, श्री-
विष्णुद्वारा कालनेमिका वध तथा देवताओंको
आश्वासन देकर ब्रह्मलोकको प्रस्थान *** १७९
- ४९-ब्रह्मलोकमें भगवान् विष्णुका सत्कार *** १८५
- ५०-नारायणश्रममें भगवान् विष्णुका शयन और
उत्थान तथा पास आये हुए ब्रह्मा आदि
देवताओंसे उनके आगमनका प्रयोजन पूछना १८७
- ५१-ब्रह्माजीका भगवान् विष्णुसे जगत्की वर्तमान
अवस्थाका वर्णन करते हुए पृथ्वीका भार
उतारनेके लिये मन्त्रणा करनेका अनुरोध *** १९१

- ५२-भगवान् विष्णु तथा सब देवताओंका मेरुपर्वतकी दिव्य सभामें उपस्थित होना और वहाँ पृथ्वीका भगवान्से भार उतारनेके लिये प्रार्थना करना ... १९४
- ५३-ब्रह्माजीकी आज्ञासे देवताओंका अंशवतरण ... १९८

- ५४-भगवान् विष्णुके प्रति देवर्षि नारदका वचन—
भूलोककी वर्तमान अवस्थाका परिचय देकर भगवान्को अवतार ग्रहण करनेके लिये प्रेरित करना २०३
- ५५-भगवान् विष्णुके द्वारा नारदजीके कथनका उत्तर तथा ब्रह्माजीका भगवान्से उनके अवतार लेने-योग्य स्थान और पिता-माता आदिका परिचय देना २०९

(विष्णुपर्व)

- १-मङ्गलाचरण, नारदजीका मथुरामें आकर कंसको आनेवाले भयकी सूचना देना और कंसका अपने सेवकोंके सामने बढ़-बढ़कर बातें बनाना ... २१३
- २-कंसद्वारा देवकीके गर्भके विनाशका प्रयत्न, भगवान् विष्णुका पाताललोकमें स्थित 'पङ्कगर्भ' नामक दैत्योंके जीर्णोपाकरण करके उन्हें निद्रा देवीके हाथमें देना और देवकीके गर्भमें क्रमशः स्थापित करनेका आदेश देकर अन्य कर्तव्य बताना तथा कार्यसाधनके अनन्तर बढ़नेवाली उस देवीकी महिमाका उल्लेख ... २१५
- ३-आर्याकी स्तुति ... २१९
- ४-कंसद्वारा देवकीके नवजात शिशुओंकी हत्या, योगमायाद्वारा सातवें गर्भका संकर्षण, श्रीकृष्णका प्राकट्य और नन्दभवनमें प्रवेश, कंसद्वारा नन्द-कन्याको मारनेका प्रयत्न और उसका दिव्य रूपमें दर्शन देना, कंसद्वारा क्षमाप्रार्थना और देवकी-द्वारा उसे समा-दान ... २२२
- ५-वसुदेवजीका नन्दकी ब्रजमें लौटनेकी सम्मति देना और नन्दजीका गोव्रजकी शोभा निहारते हुए वहाँ पधारना ... २२६
- ६-शकट-मञ्जन और पूतना-वध ... २२९
- ७-श्रीकृष्ण और बलरामका ब्रजमें घुटनोंके बल चलना तथा श्रीकृष्णका उलूखलमें बँधकर यमलाजुन-भङ्गकी लीला करना ... २३१
- ८-श्रीकृष्ण-बलरामकी बालचर्चा, श्रीकृष्णके द्वारा ब्रजको अन्यत्र ले जानेकी चेष्टा और अपने शरीरसे भेड़ियोंको उत्पन्न करके उनका समूचे ब्रजको डराना ... २३४
- ९-भेड़ियोंके उत्पातसे ब्रजवासियोंका उस स्थानको छोड़कर श्रीकृष्णदावनमें जाना ... २३७

- १०-वर्षा ऋतुका वर्णन ... २३९
- ११-श्रीकृष्णकी अङ्गच्छटा, भाण्डीर वट, यमुना और कालियदहका वर्णन तथा श्रीकृष्णद्वारा कालियनागके निग्रहका विचार ... २४२
- १२-श्रीकृष्णद्वारा कालियनागका दमन, उसका समुद्रको प्रस्थान तथा गोपोंको श्रीकृष्णकी महत्ताका अनुभव ... २४७
- १३-बलरामद्वारा घेनुकासुरका वध और भयरहित तालवनमें गौओं तथा गोपोंका विचरण ... २५०
- १४-बलरामद्वारा प्रलम्बासुरका वध ... २५२
- १५-इन्द्रोत्सवके विषयमें श्रीकृष्णकी जिज्ञासा तथा एक पृष्ठ गोपके द्वारा उसकी आवश्यकताका प्रतिपादन ... २५६
- १६-श्रीकृष्णके द्वारा गिरियज्ञ एवं गोपूजनका प्रस्ताव करते हुए शरद् ऋतुका वर्णन ... २५७
- १७-गोपोंद्वारा श्रीकृष्णकी बातको स्वीकार करके गिरियज्ञका अनुष्ठान तथा भगवान्का दिव्य रूप धारण करके उनकी पूजा ग्रहण करनेके पश्चात् उन्हें वर देना ... २६१
- १८-इन्द्रका संवर्तक मेघोंद्वारा वर्षा कराकर गौओं और गोपोंको कष्टमें डालना, श्रीकृष्णद्वारा गोवर्धनधारण तथा उसके नीचे गौओं और गोपोंसहित ब्रजवासियोंका जाना ... २६३
- १९-देवराज इन्द्रका आगमन, श्रीकृष्णका गोविन्द-पदपर अभिषेक तथा इन्द्रका श्रीकृष्णको भावी कार्य बताकर अर्जुनकी देख-भालके लिये कहना और श्रीकृष्णका उसे स्वीकार करना ... २६८
- २०-श्रीकृष्णका अलौकिक चरित्र देखकर आश्चर्यित हुए गोपोंका उनसे प्रश्न और श्रीकृष्णद्वारा उत्तर तथा उनकी राखलीलाका संक्षेपसे वर्णन २७५

- २१-अरिष्टासुरका वध २७७
- २२-कंसकी आज्ञा, उसका रात्रिके समय यदुवंशियोंको बुलाकर मरी सभामें श्रीकृष्ण और विष्णुके प्रभावकी वताना, वसुदेवपर कठोर आक्षेप करना तथा अक्रूरको श्रीकृष्ण आदिको बुला लानेके लिये व्रजमें जानेकी आज्ञा देना ... २७९
- २३-अन्धकका कंसको मुँहतोड़ उत्तर ... २८६
- २४-केशीके अत्याचार और श्रीकृष्णद्वारा उसका वध २८९
- २५-अक्रूरका व्रजमें आकर भगवान् श्रीकृष्णको देखना और उनके विषयमें अनेक प्रकारकी बातें सोचना २९४
- २६-अक्रूरका गोपोंके लिये कंसका आदेश सुनाना और वसुदेव-देवकीकी दयनीय दशा बताकर श्रीकृष्ण-बलरामको मथुरा चलनेके लिये प्रेरित करना, मार्गमें अक्रूरको यमुनाजीके जलमें आश्चर्यमय नागलोक एवं भगवान् अनन्त तथा उनकी गोदमें श्रीकृष्णका दर्शन ... २९७
- २७-श्रीकृष्ण और बलरामका मथुरामें प्रवेश, उनके द्वारा रजकका वध, मालीको वरदान, कुन्जापर कृपा और कंसके घनुषका मञ्जन ... ३०१
- २८-कंसकी चिन्ता, उसका रंगशालाको देखना और उसे सुखजित करनेका आदेश देना, चाणूर एवं मुष्टिकको तथा कुवल्यापीडके महावतको श्रीकृष्ण-बलरामके वधके लिये आज्ञा देना, महावतसे द्रुमिलके द्वारा अपनी उत्पत्तिकी कथा कहना— उसकी माताका सुयामुन पर्वतपर द्रुमिलके साथ समागम तथा उन दोनोंका परस्पर वरदान एवं शाप ३०६
- २९-नागरिकोंसे मरी रङ्गशालामें मञ्चों तथा प्रेक्षागृहोंकी शोभा, कंस तथा मल्लोंका आगमन, श्रीकृष्ण और बलरामका रङ्गद्वारपर पदार्पण, कुवल्यापीड, महावत तथा हाथीके पादरक्षकोंका वध और दोनों बन्धुओंका रङ्गशालामें प्रवेश ... ३१४
- ३०-रङ्गशालामें मल्लयुद्धके विषयमें श्रीकृष्णके विचार, श्रीकृष्ण और बलदेवके द्वारा चाणूर

- और मुष्टिक आदिका वध, कंसका संहार तथा पिता-माताके चरणोंमें प्रणाम करके दोनों भाइयोंका उनके घरमें जाना ३१७
- ३१-कंसकी स्त्रियों और माताका विछाप ... ३२३
- ३२-श्रीकृष्णका कंसवधके लिये पश्चात्तापपूर्वक उसके औचित्यका समर्पण, उग्रसेनका श्रीकृष्णको सर्वस्व-समर्पणके पश्चात् कंसका अन्त्येष्टि-संस्कार करनेके लिये अनुरोध, श्रीकृष्णका उन्हें समझा-बुझाकर राज्यपर अभिषेक करना और समस्त यादवोंके साथ आकर कंस आदिका अन्त्येष्टि-संस्कार कराना ... ३२८
- ३३-बलराम और श्रीकृष्णका गुरु सान्दीपनिके यहाँ आकर विद्या पढ़ना और गुरुदक्षिणामें उनके मरे हुए पुत्रको उन्हें देकर मथुरापुरीको लौट आना ... ३३२
- ३४-जरासंधका अपनी विशाल सेनाके द्वारा आकर मथुरापुरीपर घेरा डालना ... ३३५
- ३५-जरासंधकी सेनाका वर्णन, उसकी चारों दिशाओंसे मथुरापुरीपर आक्रमणकी योजना, यादवोंके साथ जरासंधकी सेनाका युद्ध, श्रीकृष्ण और बलरामके पराक्रमसे उसकी सेनाका पलायन, जरासंधद्वारा अपने सैनिकोंको प्रोत्साहन तथा उभय पक्षके वीरोंमें घमासान युद्ध ... ३३६
- ३६-वृष्णिवंशियों तथा जरासंधके सैनिकोंका युद्ध, बलराम और जरासंधका गदायुद्ध तथा जरासंधका पराजित होकर पलायन करना ... ३४३
- ३७-जरासंधके पुनः आक्रमणसे शङ्कित यादवोंकी सभामें विक्रान्तका भाषण-राजा इर्ष्यका चरित्र तथा उनसे यह एवं यादवोंकी उत्पत्तिकी वर्णन ... ३४६
- ३८-विक्रान्तद्वारा यदुकी संततिका वर्णन तथा मथुरा-पुरीको जरासंधका आक्रमण सहनेके अयोग्य बताना ... ३५१

- ३९-बलराम और श्रीकृष्णका पुरी और पुरवासियोंकी रक्षाके लिये मथुरासे दक्षिण भारतकी ओर प्रस्थान, परशुरामजीसे उनकी भेंट तथा उन दोनोंकी गोमन्तपर्वतपर चल्नेके लिये उनकी सलाह ... ३५५
- ४०-श्रीकृष्ण, बलराम और परशुरामजीका गोमन्त-पर्वतपर आरोहण, गोमन्तकी शोभाका वर्णन तथा परशुरामजीका श्रीकृष्णको युद्धके लिये प्रोत्साहन देकर वहाँसे प्रस्थान ... ३६१
- ४१-बलरामके पास वाक्पणी, कान्ति एवं भी (शोभा)-इन देवाङ्गनाओंका आगमन, गरुड़के द्वारा श्रीकृष्णको वैष्णव मुकुटकी प्राप्ति, श्रीकृष्णका बलरामसे वार्तालाप तथा ब्रह्मसंघकी सेनाका निरीक्षण करके अपने आपसे ही मानसिक उत्थार प्रकट करना ... ३६४
- ४२-ब्रह्मसंघकी सेनाका वर्णन, उसका सेनाकी पर्वतपर आक्रमण करनेकी आज्ञा देना, शिशुपालकी सम्मतिसे गोमन्तपर्वतमें आग लगाया जाना, पर्वतका जलना तथा बलराम और श्रीकृष्णका पर्वतसे कूदकर राजाओंकी सेनामें आ पहुँचना ... ३६९
- ४३-श्रीकृष्ण और बलरामका ब्रह्मसंघ और उसकी सेनाओंके साथ युद्ध, राजा द्रुपदकी मृत्यु, ब्रह्मसंघका पराजित होकर पलायन तथा चेदिराज दमघोषके साथ श्रीकृष्ण और बलरामका करवीरपुरमें जाना ... ३७४
- ४४-श्रीकृष्णद्वारा शृंगालका वध तथा उसके पुत्रका करवीरपुरके राज्यपर अभिषेक ... ३८१
- ४५-बलराम और श्रीकृष्णका मथुरामें प्रत्यागमन और स्वागत ... ३८५
- ४६-बलरामजीकी प्रणयाज्ञा तथा उनके द्वारा यमुनाजीका आकर्षण ... ३८७
- ४७-श्रीकृष्णका यादवोंके साथ रुक्मिणी-स्वयंवरके अवसरपर कुण्डिनपुरमें जाना तथा राजा कैशिक-द्वारा उनका सत्कार ... ३९१

- ४८-श्रीकृष्णके आगमनसे चिन्तित हुए राजाओंकी समामें ब्रह्मसंघ और सुनीथका भाषण ... ३९४
- ४९-दन्तवन्ध और शास्वका भाषण सुनकर भीष्मकका श्रीकृष्णके प्रभावका वर्णन करते हुए उन्हें प्रसन्न करनेका ही निश्चय करना ... ३९७
- ५०-ऋष और कैशिकद्वारा भगवान् श्रीकृष्णको अपने राज्यका समर्पण, देवराज इन्द्रके आदेशसे सब नरेशोंद्वारा भगवान्का राजेन्द्रके पदपर अभिषेक तथा भगवान्का सबको आश्वासन देना ... ४०२
- ५१-श्रीकृष्ण और भीष्मकका संवाद, भीष्मकद्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति तथा श्रीकृष्णका मथुरागमन ... ४०८
- ५२-शास्वके कथनानुसार ब्रह्मसंघ आदि नरेशोंका शास्वको ही काल्यवनके पास दूत बनाकर भेजना ... ४१३
- ५३-काल्यवनकी विशेषता, राजा शास्वका उसके वहाँ दूत बनकर आना और उसे ब्रह्मसंघका संदेश सुनाना ... ४१६
- ५४-काल्यवनका राजाओंका अनुरोध स्वीकार करके श्रीकृष्णपर विजय पानेके लिये मथुराको प्रस्थान ... ४२०
- ५५-गरुड़का श्रीकृष्णके निवासयोग्य भूमि देखनेके लिये जाना, मथुरामें राजेन्द्र श्रीकृष्णका स्वागत, श्रीकृष्णद्वारा राजा उग्रसेन तथा मथुरा-वासियोंका सत्कार एवं गरुड़का लौटकर कुशस्थलीके विषयमें बताना ... ४२१
- ५६-श्रीकृष्णकी आज्ञासे यादवोंका द्वारकापुरीको प्रस्थान ... ४३०
- ५७-काल्यवनका वध ... ४३३
- ५८-द्वारकापुरीका विश्वकर्माद्वारा निर्माण, निधिपति शङ्ख और सुघर्मा तथाका आनयन, श्रीकृष्णद्वारा सुव्यवस्थापूर्वक वहाँ यादवोंको बसाना तथा बलरामजीका रेवतीके साथ विवाह ... ४३७

५९-भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा रक्मिणीका हरण तथा
यादववीरोंका जरासंध एवं शिशुपाल आदिके
साथ घोर युद्ध *** ४४३

६०-श्रीकृष्णद्वारा रक्मिणीकी पराजय तथा रक्मिणी
आदिके साथ श्रीकृष्णका विवाह एवं उनसे
उत्पन्न हुई संतानोंका संक्षिप्त परिचय *** ४४८

६१-रक्मिणीकी पुत्री शुभाङ्गीद्वारा स्वयंवरमें प्रद्युम्नका
वरण, प्रद्युम्नपुत्र अनिरुद्धका रक्मिणीकी पौत्री
रक्मवतीके साथ विवाह तथा बलरामद्वारा
रक्मिणीका वध *** ४५१

६२-नलदेवजीका माहात्म्य, उनके द्वारा हस्तिनापुरको
गङ्गामें गिरानेका अद्भुत प्रयत्न *** ४५५

६३-नरकासुरका परिचय, द्वारकामें इन्द्रका आगमन
और श्रीकृष्णसे नरकवधके लिये अनुरोध,
सत्यमामासहित श्रीकृष्णका प्राग्व्योतिषपुरमें
गमन तथा उनके द्वारा मय, निसुन्द, हयग्रीव,
विरूपाक्ष, पञ्चनाद, अन्यान्य असुर तथा
नरकासुरका वध *** ४५६

६४-श्रीकृष्णका नरकासुरके भवनमें प्रवेश करके
वहाँके घन-वैभव तथा सोलह हजार कुमारियोंको
द्वारका भेजना और स्वयं देवलोकेमें जा अदितिकी
कुण्डल दे वहाँसे पारिजात लेकर लौटना *** ४६५

६५-रैवतक पर्वतपर रक्मिणीके व्रतोद्यापनका
उत्सव, उसमें पारिजात-पुष्प देकर श्रीकृष्णद्वारा
रक्मिणीका सम्मान, नारदजीद्वारा रक्मिणीके
सर्वाधिक सौभाग्यकी प्रशंसा तथा सत्यभामाका
कोपभवनमें प्रवेश *** ४६९

६६-श्रीकृष्णका सत्यभामाको मनाना और
सत्यभामाका मानसिक खेद प्रकट करके उनसे
तपस्याके लिये अनुमति माँगना *** ४७३

६७-श्रीकृष्णके पृच्छनेपर सत्यभामाका उन्हें अपने
सोप एवं खेदका कारण बताना, श्रीकृष्णका
उनके लिये पारिजात वृक्ष लानेका विश्वास
दिलाकर उन्हें संतुष्ट करना, सत्यभामा और

श्रीकृष्णद्वारा नारदजीका सत्कार तथा नारदजीके
द्वारा पारिजातकी उत्पत्ति और महिमाका वर्णन ४७७

६८-श्रीकृष्णका पारिजात वृक्ष माँगनेके लिये
नारदजीके द्वारा इन्द्रके पास संदेश भेजना और
न देनेपर उन्हें गदा मारनेकी धमकी देना *** ४८२

६९-स्वर्गमें महादेवजीकी परिचर्याके लिये नृत्य-गीत
आदि उत्सव, नारदजीकी इन्द्रको श्रीकृष्णका
पारिजातके लिये प्रार्थनाविषयक संदेश सुनाना
और इन्द्रका अनेक कारण बताकर पारिजातको न
देनेका विचार प्रकट करना *** ४८५

७०-श्रीकृष्णके द्वारा गदा-प्रहारकी धमकी सुनकर
कुपित हुए इन्द्रका नारदजीसे उनके बर्तावकी
कटु आलोचना करना और युद्ध किये बिना
पारिजात वृक्षको न देनेका ही निश्चय करना *** ४९०

७१-नारदजीके द्वारा श्रीकृष्णकी महत्ताका प्रतिपादन
सुनकर भी इन्द्रका उन्हें पारिजात देनेको
उद्यत न होना *** ४९४

७२-श्रीकृष्णका नारदजीको अमरावतीपर आक्रमण
करनेका निश्चय बताकर इन्द्रके पास संदेश
भेजना, इन्द्र और बृहस्पतिकी बातचीत,
बृहस्पतिका कश्यपजीको यह सभाचार बताना
और कश्यपजीका युद्धकी शान्तिके लिये भगवान्
शङ्करकी स्तुति करना *** ४९८

७३-इन्द्र और श्रीकृष्ण, जयन्त और प्रद्युम्न, मयूर
और सात्यकि तथा ऐरावत और गन्धका युद्ध ५०५

७४-रानिमें युद्ध स्थगित करके श्रीकृष्णका पारियात्र
पर्वतको वरदान देना, गङ्गाका स्मरण करना,
त्रिलोक और गङ्गाजलपर महादेवजीका आवाहन
करके उन त्रिलोकेश्वरकी पूजा और स्तुति
करना, महादेवजीका उन्हें अभीष्ट वर देकर
दैत्योंको मारनेका आदेश देना तथा पारियात्र
पर्वतपर भगवान्का निवास एवं उनकी प्रतिमाके
पूजनकी महिमा *** ५११

७५-इन्द्र और उग्रेन्द्रका पुनर्पुद्ग, उत्पत्तीका प्राकट्य, ब्रह्माजीकी आज्ञासे कश्यप और अदितिका नीचमें आकर दोनोंका युद्ध बंद कराना, फिर सबका स्वर्गमें गमन, अदितिकी आज्ञासे शचीद्वारा उपहार पाकर पारिजातसहित द्वारका-गमन, पारिजातसे द्वारकावासियोंकी प्रसन्नता, सत्यभामाके पुण्यक-व्रतमें प्रतिग्रहके लिये श्रीकृष्णद्वारा नारदजीका स्मरण ... ५१५

७६-सत्यभामाद्वारा पुण्यक-व्रतमें श्रीकृष्णका नारदजीकी दान, नारदजीका निष्कय लेकर श्रीकृष्णको छोड़ना और उनसे वर पाना, श्रीकृष्णका सगे-सम्बन्धियोंको पारिजात दिखाकर पुनः उसे स्वर्गमें पहुँचाना ५२०

७७-पुण्यक-विधिके वर्णनका उपक्रम ... ५२२

७८-उमाद्वारा सती जीके महत्त्वका वर्णन करते हुए पुण्यक-व्रतकी विधिका उपदेश ५२४

७९-पुण्यक-व्रतसम्बन्धी नियम एवं दानका वर्णन तथा पुत्र आदिके निमित्त किये जानेवाले दूसरे व्रत एवं दानका प्रतिपादन ५२६

८०-नाना प्रकारके व्रतोंका विधान ५३१

८१-उमाके द्वारा व्रतकथनका उपसंहार, श्रीनारदजीका देवियोंद्वारा किये गये व्रतोंका वर्णन करना तथा श्रीकृष्ण-पत्नियोंद्वारा व्रतका अनुष्ठान एवं दान ५३५

८२-पट्टपुरवासी असुरोंका संक्षिप्त परिचय, उन्हें ब्रह्मा और भगवान् शिवका वरदान ५३८

८३-ब्रह्मदत्तके यज्ञमें वसुदेव-देवकीका आगमन, दैत्योंद्वारा ब्रह्मदत्तकी कन्याओंका अपहरण और प्रद्युम्नद्वारा उनकी रक्षा, नारदजीके कहनेसे दैत्योंका क्षत्रिय नरेशोंको अपने पक्षमें मिलाना तथा श्रीकृष्णका पट्टपुरमें आगमन ५४०

८४-श्रीकृष्णद्वारा यादव-सेनाकी युद्धके लिये नियुक्ति, दानवोंका निष्क्रमण, निकुम्भद्वारा कुछ यादववीरोंका युद्धमें घंटी होना, श्रीकृष्णके द्वारा दानव-सैनिकोंका संहार, प्रद्युम्नद्वारा राजसैनिकोंका युद्धमें अवरोध तथा ब्रह्मदत्तको सन्तवना ... ५४४

८५-निकुम्भका जयन्तसे पराजित होकर भगवान् श्रीकृष्णके साथ युद्ध करना, श्रीकृष्णका अर्जुनको निकुम्भका चरित्र बताना, आकाशवाणीकी प्रेरणासे सुदर्शनचक्रद्वारा निकुम्भका वध करना और ब्रह्मदत्तको पट्टपुर नगर देकर द्वारकाको प्रस्थान करना ... ५४८

८६-अम्बकासुरकी उत्पत्ति और अनाचा, उसके वधके लिये ऋषियोंका विचार, नारदजीका मन्दारपुष्पोंकी माला धारण करके अम्बकके यहाँ जाना और उससे मन्दार वनके महत्त्व बताना ५५३

८७-मन्दराक्षलपर गये हुए अम्बकासुरका महादेवजीद्वारा वध ... ५५७

८८-पिण्डारकतीयके अन्तर्गत समुद्रमें श्रीकृष्ण तथा अन्य यादवोंका जलविहार ... ५६०

८९-इलराम और श्रीकृष्ण आदि यादवोंकी जलक्रीड़ा एवं गान आदिका वर्णन ... ५६६

९०-निकुम्भद्वारा भानुमतीका अपहरण, श्रीकृष्ण, अर्जुन और प्रद्युम्नके साथ उसका युद्ध, गोकर्णतीर्थमें उसका पतन, प्रद्युम्नका भानुमतीको लेकर द्वारका पहुँचाना, फिर तीनोंका निकुम्भके साथ युद्ध, उसकी अद्भुत मायाका वर्णन और श्रीकृष्णद्वारा निकुम्भका वध ... ५७७

९१-वज्रनाभकी तपस्या और वरप्राप्ति, उसका त्रिभुवन-विजयके लिये उद्योग, इन्द्रकी श्रीकृष्ण-से वार्ता, भद्रनामा नटकी सुनिर्घोषा वरदान, इन्द्रका हंसोंको आवश्यक कर्तव्य बताकर वज्रनाभपुरमें भेजना ... ५८२

९२-हंसोंका वज्रपुरमें निवास, हंसोंका प्रभावतीको प्रद्युम्नके प्रति अनुरक्त कराना, प्रभावतीका हंससे प्रद्युम्नकी प्राप्ति करानेका अनुरोध, हंस और वज्रनाभका संवाद, हंसोंके मुँहसे सब समाचार सुनकर श्रीकृष्णका नट्येवमें प्रद्युम्न आदि यादवोंकी वज्रपुरमें भेजना ... ५८५

९३-नटवेशधारी यादवोंका सुपुर और वज्रपुरमें
सफल अभिनय करके दानवोंको रिझाकर उनसे
उपहार पाना तथा प्रद्युम्नका प्रभावतीके घरमें
प्रवेश ... ५८९

९४-प्रद्युम्न और प्रभावतीका गान्धर्वविवाह एवं
समागम, फिर गद और चन्द्रवतीका तथा साम्न
और गुणवतीका गान्धर्वविवाह ... ५९४

९५-प्रद्युम्नका प्रभावतीसे वर्षाका वर्णन करते हुए
उसे अपने कुलका परिचय देना ... ५९७

९६-कश्यपके मना करनेपर भी वज्रनाभका त्रिलोक-
विजयके लिये प्रस्थान, श्रीकृष्ण और इन्द्रका
प्रद्युम्नको संदेश देना और उनकी संततिके
प्रभावका उल्लेख करना, दैत्योंका प्रद्युम्न
आदिके पुत्रोंको बंदी बनाना, प्रभावती आदि-
का पतियोंको तलवार देकर युद्धके लिये भेजना,
इन्द्रके द्वारा उनकी सहायता तथा प्रद्युम्नका
अद्भुत पराक्रम ... ६०१

९७-प्रद्युम्नद्वारा वज्रनाभका वध तथा प्रद्युम्न आदि-
के पुत्रोंका राज्याभिषेक ... ६०६

९८-इन्द्रकी आज्ञासे विश्वकर्माद्वारा पुनः परिष्कृत की
गयी द्वारकापुरीका वर्णन ... ६०९

९९-श्रीकृष्णका द्वारका तथा अन्तःपुरमें प्रवेश
और मणिपर्वत एवं पारिजातको यथोचित
स्थानमें स्थापित करना ... ६१४

१००-श्रीकृष्णका समस्त यादवोंसे मिळकर उन्हें
सम्मानित करनेके लिये सभामें बुलाना ... ६१६

१०१-श्रीकृष्णद्वारा यादवोंका सत्कार तथा नारदजीका
यादवोंकी सभामें श्रीकृष्णके प्रभावका वर्णन करना ६१७

१०२-नारदजीके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णके अद्भुत
कर्मोंका वर्णन ... ६२२

१०३-श्रीकृष्णकी संततिका वर्णन तथा वृष्णिवंशका
उपसंहार ... ६२५

१०४-प्रद्युम्नका जन्म, शम्बरसुरद्वारा प्रद्युम्नका
वधिकाग्रहसे अपहरण, प्रद्युम्न-मायाक्री-संवाद

और प्रद्युम्नका शम्बरसुरके सौ पुत्रोंके साथ
युद्ध ... ६२७

१०५-प्रद्युम्नद्वारा शम्बरसुरकी सेना और मन्त्रियोंका
संहार ... ६३१

१०६-शम्बरसुर और प्रद्युम्नका मायामय युद्ध,
शम्बरकी चिन्ता, देवराज इन्द्रकी आज्ञासे
नारदजीका प्रद्युम्नको उनके पूर्व स्वरूपका
स्मरण दिलाना और आवश्यक कर्तव्य सुझाना ६३६

१०७-प्रद्युम्नके द्वारा शम्बरसुरका वध ... ६४०

१०८-मायावतीसहित प्रद्युम्नका द्वारकामें आगमन
और रुक्मिणीके भवनमें प्रवेश ... ६४२

१०९-बलदेवजीके द्वारा प्रद्युम्नको आह्निकस्तोत्रका
उपदेश ... ६४५

११०-साम्बकी उत्पत्ति और अन्नशिक्षा तथा द्वारकामें
पधारें हुए राजाओंके बीच नारदजीके द्वारा
भगवान् श्रीकृष्णकी परम धन्यताका प्रतिपादन ६५०

१११-श्रीकृष्णकी महिमा-अर्जुनका श्रीकृष्णसे आज्ञा
लेकर ब्राह्मण-बालककी रक्षाके लिये जाना ... ६५६

११२-ब्राह्मणबालककी रक्षा न होनेपर ब्राह्मणद्वारा
अर्जुनका तिरस्कार और श्रीकृष्णके साथ उनका
उत्तर दिशाको गमन ... ६५७

११३-श्रीकृष्णद्वारा ब्राह्मणपुत्रोंका आनयन ... ६५९

११४-भगवान् श्रीकृष्णका अर्जुनको अपने यथार्थ
स्वरूपका परिचय देना ... ६६२

११५-भगवान् श्रीकृष्णके पराक्रमोंका संक्षेपसे वर्णन ६६४

११६-भगवान् शङ्करका बाणासुरको अपने और देवी
पार्वतीके पुत्रके रूपमें स्वीकार करना, बाणासुर-
का उनसे युद्धके लिये वर माँगना और पाना
तथा इससे बाण-मन्त्री कुम्भाण्डका चिन्तित
होना ... ६६५

११७-शिव-पार्वतीका क्रीड़ाविहार, पार्वतीका उषाको
पति-समागमके लिये वर देना तथा उषाकी
विवाह-व्यथाका वर्णन ... ६७१

११८-उषाका स्वप्नमें प्रियतमके साथ समागम, इससे

उषाकी चिन्ता, सखियोंका उसे समझाना, कुम्भापङ्कुमारीके कहनेसे उषाका चित्रलेखाको बुलाकर उसे अपना कष्ट बताना, चित्रलेखाके बनाये हुए चित्रोंसे उषाका अनिरुद्धको पहचानना और उन्हें लानेके लिये चित्रलेखाका द्वारकाको जाना *** ६७५

११९-चित्रलेखा और नारदजीका संवाद, चित्रलेखाका नारदजीसे तामसी विद्या ग्रहण कर अनिरुद्धको शोणितपुर ले जाना, उषा और अनिरुद्धका गान्धर्व-विवाह, अनिरुद्धका बाणासुरके सैनिकों तथा बाणासुरके साथ युद्ध, उनका नागपाशमें बँधकर बँदी होना तथा नारदजीका द्वारका जाना *** ६८२

१२०-अनिरुद्धके द्वारा आर्यादेवीकी स्तुति और देवीका प्रसन्न होकर उन्हें बन्धनके कष्टसे मुक्त करना *** ६९५

१२१-अनिरुद्धके अपहरणसे रनवासमें शोक, श्रीकृष्ण और यादवोंकी चिन्ता, गुप्तचरोंकी नियुक्ति और उनकी विफलता, नारदजीका आगमन और अनिरुद्धका समाचार-निवेदन, श्रीकृष्णके द्वारा गरुड़का आवाहन और स्तवन, गरुड़-द्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति और श्रीकृष्णका शोणितपुरको प्रस्थान *** ६९९

१२२-श्रीकृष्ण, ब्रह्मद और प्रद्युम्नका शोणितपुरके लिये प्रस्थान, गरुड़का आह्वानीय अग्नि-को बान्त करना, श्रीकृष्णद्वारा अग्निगणोंकी पराजय, बाणासुरके सैनिकोंके साथ श्रीकृष्ण आदिका युद्ध, त्रिशिरा ज्वरका आक्रमण और श्रीकृष्णके साथ उसका युद्ध *** ७०८

१२३-श्रीकृष्णसे पराजित हुए ज्वरका उनकी शरणमें जाना, उनसे वर पाना और उनकी आज्ञा शिरोधार्यकर रणभूमिसे हट जाना *** ७१४

१२४-बाणासुरकी सेनाका पलायन, भगवान् शङ्करका

अपने गणोंके साथ युद्धके लिये आगमन, भगवान् श्रीकृष्ण और रुद्रका युद्ध तथा बाणासुरका युद्धभूमिमें पदार्पण *** ७१७

१२५-श्रीकृष्णके जन्माख्यसे भगवान् शङ्करका जैमाईके वशीभूत होना, ब्रह्माजीके द्वारा शिव-जीको विष्णुके साथ उनकी एकताका स्मरण दिलाना तथा ब्रह्माजीके पूछनेपर मार्कण्डेयजीका हरिहरकी एकता स्थापित करते हुए माहात्म्यसहित हरिहरात्मक स्तोत्रका वर्णन करना *** ७२१

१२६-स्वामी कार्तिकेय और श्रीकृष्णके युद्धमें स्वामी कार्तिकेयकी पराजय, कोटवीदेवीका कार्तिकेयकी रक्षा करना, बाणासुर और श्रीकृष्णका युद्ध, श्रीकृष्णका बाणासुरकी हजार भुजाओंको काटना, महादेवजीका बाणासुरको महाकाल होनेका वरदान देना *** ७२५

१२७-अनिरुद्धका नागपाशसे छुटकारा और उनके द्वारा श्रीकृष्ण आदिकी वन्दना, नारदजीके कहनेसे उनका वीर्य-विवाह, उषाकी विदाई, उनके द्वारकाको प्रस्थान, मार्गमें श्रीकृष्णद्वारा वरुण देवतापर विजय, वरुणद्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति और पूजा, श्रीकृष्णके आगमनसे द्वारका-वासियोंका हर्ष, भगवान्के आदेशसे पुरवासियों द्वारा देवताओंकी वन्दना, इन्द्रद्वारा श्रीकृष्णकी प्रशंसा और सब देवताओं तथा ऋषियों आदि-का अपने-अपने स्थानको जाना *** ७३६

१२८-द्वारकामें उत्सव, उषाका अन्तःपुरमें प्रवेश और सत्कार, श्रीकृष्ण और विष्णुपर्वकी महिमा तथा पर्वका उपसंहार *** ७४६

(भविष्यपर्व)

१-जनमेजयकी संतति एवं पौरव तथा पाण्डववंश-की प्रतिष्ठाका वर्णन *** ७४९

२-राजा जनमेजयका अश्वमेजय करनेका विचार, व्यासजीका आगमन और राजा द्वारा उनका सत्कार, आपने पाण्डवोंको राजसूय यज्ञ करनेसे

क्यों नहीं रोका—यह जनमेजयका प्रश्न और उसके उत्तरमें व्यासजीद्वारा कालकी प्रवृत्तताका प्रतिपादन *** ७५०

३-व्यासजीद्वारा कलियुगकी स्थितिका वर्णन *** ७५४

४-कलियुगका वर्णन *** ७५७

- ५-व्यासजी आदिका गमन, जनमेजयके अश्वमेधयज्ञ-
में इन्द्रका विघ्न डालना, जनमेजयद्वारा इन्द्रको
शाप, ब्राह्मणोंका निर्वासन तथा अपनी पत्नीकी
मर्त्यता, विश्वावसुका जनमेजयको समझाना... ७६१
- ६-जनमेजयका संतुष्ट होकर राज्य-शासन करना
तथा इस ग्रन्थके पाठ और श्रवणकी महिमा... ७६४
- ७-पुष्कर-प्रादुर्भावके विषयमें जनमेजयका प्रश्न और
वैशम्पायनजीका उत्तर—भगवान् नारायणकी
महिमाका प्रतिपादन ... ७६५
- ८-सत्ययुग आदिके परिमाणका वर्णन ... ७६७
- ९-प्रलयके प्रश्नात् एकान्तके जलमें भगवान् नारा-
यणका शयन ... ७६९
- १०-एकान्तमें भगवान् और मार्कण्डेयजीका संवाद ७७०
- ११-परमात्माके द्वारा भूतोंकी सृष्टि तथा ब्रह्माजीको
प्रकट करनेके लिये उनकी नाभिसे एक महान्
पद्मका प्रादुर्भाव ... ७७५
- १२-नारायणके नाभिकमलके दलोंमें समस्त लोकोंकी
कल्पना ... ७७७
- १३-मधु और कैटमका ब्रह्माजीके साथ संवाद तथा
भगवान् विष्णुके द्वारा वच ... ७७८
- १४-ब्रह्माजीके तीन पुत्रोंको परम पदकी प्राप्ति, फिर
उनके द्वारा मैथुनी सृष्टिका विस्तार, दक्ष-
कन्याओंकी संतति का वर्णन ... ७८०
- १५-जनमेजयके द्वारा महाभारत-वर्णित चरित्रकी
प्रशंसा ... ७८५
- १६-सृष्टिविषयक वर्णनके प्रसङ्गमें ज्ञान और योगका
विचार ... ७८६
- १७-मैनाककी स्थिति, मेरुपर्वपर परमात्मासे ब्रह्मा-
जीका प्राकट्य, मेरुकी विशालता, ब्रह्माजीके
द्वारा सृष्टि, ब्रह्म और ब्रह्माके स्वरूपका वर्णन,
गङ्गाका प्रादुर्भाव, सोमकी उत्पत्ति, चर्मके पाद,
योग-साधना, ऐश्वर्यसे हानि, वेदोंका प्राकट्य,
यशपुरवृक्षका वर्णन, योगवेदाकी महिमा, चित्तकी

उपलब्धिमें कारण, मोक्ष-सम्बन्धी कर्म करनेका
विधान और कर्मफलके त्यागसे मुक्ति ... ७८९

- १८-योगके उपसर्ग (विघ्न), योगीकी विष्णुरूपसे
स्थिति, कर्मलक्ष्यसे मुक्ति, सकाम कर्मियोंकी धूम-
मार्गसे गति और पुनरावृत्ति, शानी एवं योगी-
को तत्त्वका साक्षात्कार तथा ब्रह्मयुगका वर्णन... ७९५
- १९-योगीकी स्थिति तथा उसके समक्ष आनेवाले
विघ्नरूप ऐश्वर्योंका वर्णन ... ७९८
- २०-ब्रह्माजीके द्वारा योगधारणपूर्वक की गयी
मानसिक सृष्टिका वर्णन ... ८०२
- २१-क्षत्रयुगके प्रसंगमें शानतिद्व ब्राह्मणोंका वर्णन,
प्रजापतिदक्षद्वारा प्राणियों एवं चारों वर्गोंकी
सृष्टि तथा उनका अपने पुत्रोंको घात्रीका अन्त
धाननेके लिये आदेश ... ८०३
- २२-दक्षका अपने आधे अङ्गसे स्त्रीरूप होकर बहुता-
सी कन्याओंको उत्पन्न करना और उनका धर्म,
कश्यप एवं सोमको दान कर देना, कश्यप और
दक्षकन्याओंकी संतानोंका वर्णन तथा देवलोकमें
उत्पन्न होनेवालोंकी योग्यता ... ८०५
- २३-ब्रह्माजीके महायज्ञका वर्णन ... ८०७
- २४-चारों आश्रमोंमें स्थित हुए ब्राह्मणोंकी ब्रह्म जीके
यज्ञस्थलके पुण्य-प्रदेशमें निवासकी इच्छा ... ८११
- २५-नास्द आदिके द्वारा ब्राह्मणों तथा ब्रह्माजीका
सत्कार, ब्रह्माजीके दाश कश्यपको यज्ञका आदेश,
देवता-दानव-सुद्ध तथा विष्णुके द्वारा मधुकी
पराजय ... ८१२
- २६-मधु और विष्णुका घोर युद्ध, देवताओं और
अपिषोंद्वारा श्रीविष्णुकी स्तुति, हयग्रीवरूपधारी
विष्णुद्वारा मधुका वध और पृथ्वीकी मेदिनी
नामकी प्राप्ति ... ८१३
- २७-मधुके पतनसे समस्त प्राणियोंको हर्ष, वहाँ
एकत्र हुए पर्वतों और वनस्त ऋतुका वर्णन,
मधुवाहिनी नदीका प्राकट्य और गौरीसिद्धाका
माहात्म्य ... ८१७

- २८-पुष्करमें श्रीविष्णु आदिकी तपस्या और उसके प्रभावका वर्णन ... ८२१
- २९-तपस्याके प्रभावसे देवताओंका उत्कर्ष ... ८२८
- ३०-पृथुका राज्याभिषेक तथा दैत्यों और देवताओं-द्वारा मन्दराचलके मन्थनदण्डद्वारा समुद्रका मन्थन, समुद्रसे अन्य रत्नोंके साथ अमृतका प्राकट्य और राहुके सिरका छेदन ... ८३०
- ३१-त्रिलोके यशमें वामनद्वारा त्रिलोकीके राज्यका अपहरण तथा कालान्तरमें देवताओंद्वारा बलिका राज्याभिषेक ... ८३२
- ३२-दश-यश-विष्वंस ... ८३३
- ३३-वाराहवतारका उपक्रम ... ८३८
- ३४-भगवान् यक्षराक्षसोंके द्वारा पृथ्वीका उद्धार ... ८४१
- ३५-भगवान् वाराहके द्वारा विभिन्न दिशाओंमें पर्वतों और नदियोंका निर्माण ... ८४४
- ३६-भगवत्की सृष्टिका वर्णन ... ८४७
- ३७-ब्रह्माजीद्वारा विभिन्न वर्गके अधिपतियोंकी नियुक्ति ... ८५१
- ३८-देवासुर-संग्राम तथा हिरण्याक्षद्वारा देवराज इन्द्रका स्तम्भन ... ८५४
- ३९-भगवान् वाराहद्वारा हिरण्याक्षका वध ... ८५६
- ४०-देवताओंकी अपने प्रभुत्वकी प्राप्ति, देवराज इन्द्रकी सम्पूर्ण लोकोंके आधिपत्यपर प्रतिष्ठा, सत्-असत् पुरुषोंकी यथोचित गतिके लिये आदेश देकर भगवान्का अन्तर्धान होना तथा देवेन्द्रद्वारा पर्वतोंके पंखका छेदन ... ८५८
- ४१-हिरण्यकशिपुकी तपस्या, वरप्राप्ति, अत्याचार, देवताओंको ब्रह्माजीका आश्वासन, भगवान् विष्णुका नरसिंहरूप धारण करके हिरण्यकशिपुकी समामें जाना तथा उस समाका वर्णन ... ८६०
- ४२-भगवान् नरसिंहका देवता, गन्धर्व, अप्सराओं तथा दैत्योंसे खेवित हिरण्यकशिपुकी देखना ... ८६५
- ४३-प्रह्लादको नरसिंह-विग्रहमें समस्त त्रिलोकीका दर्शन ... ८६६
- ४४-दैत्यों तथा हिरण्यकशिपुद्वारा नरसिंहपर विभिन्न अस्त्रोंका प्रहार ... ८६७
- ४५-दैत्योंद्वारा किये गये प्रहारों और रक्षी गयी मायाओंकी निष्फळता ... ८६९
- ४६-दैत्योंके विनाशकी सूचना देनेवाले महान् उत्पात, हिरण्यकशिपुका गदा लेकर घावा करना तथा उसके पैरोंकी घमकसे पृथ्वी, पर्वत, नदी एवं देशोंका कम्पित होना ... ८७१
- ४७-देवताओंके अनुरोधसे भगवान् नरसिंहद्वारा हिरण्यकशिपुका वध तथा देवताओं और ब्रह्माजीद्वारा उनकी स्तुति ... ८७६
- ४८-वामनावतारका उपक्रम, बलिका अभिषेक तथा दैत्योंका उनसे त्रैलोक्य-विजयके लिये अनुरोध ... ८७८
- ४९-देवताओंके साथ युद्धके लिये दैत्योंकी तैयारी ... ८८०
- ५०-पुलोमा, हयग्रीव, प्रह्लाद और शम्भरासुरका युद्धके लिये उद्योग ... ८८३
- ५१-अनुहाद, विरोचन, कुजम्भ, असिलोमा, वृत्र, एकचक्र, वृत्रभ्राता, राहु, विप्रचित्ति, केशी, वृषपर्वा तथा बलिका युद्धके लिये तैयार होकर आगे बढ़ना ... ८८५
- ५२-इन्द्र आदि देवताओं और लोकपालोंका युद्धके लिये उद्योग और प्रस्थान ... ८९३
- ५३-देवताओं और असुरोंका द्वन्द्वयुद्ध, भीषण उत्पात, ब्रह्माजी तथा सनकादि योगेश्वरोंका युद्ध देखनेके लिये आगमन ... ८९९
- ५४-देवताओं और असुरोंके युद्धका यशस्वी रूपमें वर्णन, दोनों सेनाओंका कुमुलयुद्ध तथा सावित्र और ध्रुवकी पराजय ... ९०२
- ५५-नमुचिद्वारा घर नामक वसुकी, मयासुरद्वारा त्वष्ठाकी, वायुदेवद्वारा पुलोमाकी, हयग्रीवद्वारा पूषा देवताकी, शम्भरासुरद्वारा भगकी तथा चन्द्रदेवद्वारा समूची दैत्यसेनाकी पराजय ... ९०७

५६-देवताओं और दानवोंका घोर संग्राम—

विरोचनका विष्वक्सेनके साथ और कुबज्जका
अंश देवताके साथ युद्ध करते समय घोर पराक्रम
प्रकट करना ... ९१७

५७-देवासुरसंग्राममें कुबज्ज, अशिलोमा और
वृत्रासुरके उत्कर्षका वर्णन तथा हरि एवं

अश्विनीकुमारकी पराजय ... ९२१

५८-रणाजि और एकचक्रके, भृगुव्याघ और

बलासुरके, अवैकपाद् और राहुके तथा

सुधुम्रास एवं केशरी दैत्यके युद्धका वर्णन ... ९२५

५९-वृषपर्वा और निष्कुम्भ नामक विश्वेदेवके तथा

प्रह्लाद और कालके घोर युद्धका वर्णन ... ९३१

६०-कुबेर और अनुह्लादका भयंकर युद्ध ... ९३८

६१-वसुणका विप्रचित्तिके साथ युद्ध और पराजय ... ९४२

६२-अग्निद्वारा दैत्योकी पराजय तथा बृहस्पतिके

द्वारा अग्निदेवका स्तवन ... ९४५

६३-राजा बलिके प्रति प्रह्लादका वचन तथा बलिका

देवसेनापर आक्रमण ... ९४८

६४-बलि और इन्द्रका युद्ध तथा इन्द्रका रणभूमिसे

पलायन ... ९४९

६५-विजयी बलिके पास राजलक्ष्मी आदिका

शुभागमन ... ९५१

६६-अदिति और कश्यपजीके साथ देवताओंका

ब्रह्मलोकमें जाना ... ९५३

६७-ब्रह्माजीकी आज्ञासे कश्यप और अदितिसहित

देवताओंका क्षीरसागरके उत्तरतटपर जाकर

तपस्यामें संलग्न होना ... ९५६

६८-कश्यपद्वारा परमपुरुष परमात्माका स्तवन ... ९५७

६९-कश्यप-अदिति और देवताओंको भगवान्

विष्णुका वरदान देना और अदितिके गर्भसे

प्रकट होना ... ९५९

७०-ऋषियों और विविध देवताओंका वामनजीको

नमस्कार करना, गन्धर्वों तथा अप्सराओंका

नाचना-गाना, भगवान्के वैशिष्ट्यका वर्णन,

भगवान्का देवताओंसे उनका मनोरथ पूछकर

बृहस्पतिजीके साथ बलिके यज्ञमें जाना, वहाँ

अपनी वाक्यशुद्धतासे सबको चकित कर देना

और राजा बलिका उनसे परिचय तथा आगमन-

का प्रयोजन पूछना ... ९६१

७१-वामनद्वारा बलिके यज्ञकी प्रशंसा, बलिसे

मोंगनेके लिये प्रेरित होनेपर वामनका उनसे

तीन पग भूमि मोंगना, शुक्राचार्य और प्रह्लाद-

का बलिको दान देनेसे रोकना, बलिद्वारा

दानका समर्थन तथा दान पाते ही वामनका

अपने विराटरूपको प्रकट करना ... ९६५

७२-विराटरूपवारी वामनपर आक्रमण करनेवाले

दैत्योंके नाम, रूप और आयुओंका परिचय,

भगवान्का तीनों लोकोंको नापकर राज्यका

विभाजन करना, बलिको पातालका राज्य दे

मर्यादा बँधकर उन्हें वहाँ भोजना, जीविकाकी

व्यवस्था करना, नारदजीका बलिको मोक्षविशेष

स्तोत्रका उपदेश देना, उसके प्रभावसे बलिका

बन्धन-मुक्त होना और उस स्तोत्रकी महिमा ९६९

७३-कस्मिणी देवीकी भगवान् श्रीकृष्णसे पुत्रके

लिये प्रार्थना और भगवान्का उन्हें आश्वासन

देते हुए कैलास जानेका विचार प्रकट करना ९७६

७४-भगवान् श्रीकृष्णका यादवसभामें अपनी कैलास-

यात्राका विचार प्रकट करते हुए नगरकी रक्षाके

लिये यादवोंको सावधान रहनेका आदेश देना ९७९

७५-भगवान् श्रीकृष्णकी सात्यकि और उद्धवसे

नगरकी रक्षाके विषयमें बातचीत तथा बलराम

आदि यादवोंको भी रक्षाका भार सौंपकर उनका

कैलासयात्राके लिये उद्यत होना ... ९८१

७६-गदगदपर आरुढ़ होकर श्रीकृष्णका बदरिकाश्रम-

में जाना, मार्गमें देवताओं-मुनियोंद्वारा उनकी

स्तुति ... ९८३

७७-देवताओंसहित श्रीकृष्णका बदरिकाश्रममें

ऋषियोंद्वारा आतिथ्य-सत्कार ... ९८६

- ७८-भगवान् श्रीकृष्णकी समाधि, महान् कोलाहल और उनके पास भागते हुए मृग आदिका आगमन ९८७
- ७९-भगवान् श्रीकृष्णके समक्ष दो पिशाचोंका आगमन ९८९
- ८०-घण्टाकर्ण और भगवान् श्रीकृष्णका एक-दूसरेकी अपना परिचय देना तथा घण्टाकर्णद्वारा भगवान् विष्णुका स्तवन एवं समाधि-लाभ ९९१
- ८१-पिशाचको समाधि-अवस्थामें भगवान् विष्णुका साक्षात्कार ९९६
- ८२-घण्टाकर्णद्वारा भगवान् विष्णुकी स्तुति ९९८
- ८३-घण्टाकर्णद्वारा भगवान् श्रीकृष्णको उपहार समर्पण, भगवान्का उसे वर देना और एक मरे हुए बाढ़ाणको जीवित करना १००१
- ८४-श्रीकृष्णका कैलासपर पहुँचकर वहाँ बारह वर्षोंके लिये कठोर तपस्यामें संलग्न होना १००४
- ८५-भगवान् श्रीकृष्णके समीप इन्द्र आदि देवताओं तथा उमासहित भगवान् शिवका आगमन १००६
- ८६-पिशाचों, मुनियों और अप्सराओंके साथ उमा-सहित भगवान् शङ्करका श्रीकृष्णके समीप गमन १००७
- ८७-भगवान् श्रीकृष्णद्वारा महादेवजीकी स्तुति १००९
- ८८-भगवान् शिवद्वारा श्रीविष्णुकी स्तुति १०११
- ८९-भगवान् शङ्करका ऋषियोंको श्रीकृष्णतत्त्वका उपदेश देना १०१६
- ९०-भगवान् शङ्करद्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति और श्रीकृष्णका कैलाससे नदरिकाश्रममें लौटना १०१७
- ९१-पौण्ड्रकका राजाओंकी सभाओंमें अपनेको शङ्ख, चक्र आदिसे युक्त वासुदेव घोषित करना और श्रीकृष्णको पराजित करनेका मनसूझा बँधना १०२०
- ९२-पौण्ड्रकके यहाँ नारदजीका आगमन और उसके साथ उनकी बातचीत १०२१
- ९३-नारदजीका श्रीकृष्णके पास जाना और पौण्ड्रकका द्वारकापर आक्रमण १०२३

- ९४-यादव वीरोंद्वारा पौण्ड्रककी सेनाका और एक-लव्यद्वारा यादव-सेनाका संहार १०२४
- ९५-पौण्ड्रकद्वारा पूर्वद्वारके परकोटोंको तोड़नेका प्रयत्न, सात्यकि आदि यादववीरोंका रक्षाके लिये पहुँचना, सात्यकिका वायव्याखद्वारा पौण्ड्रकसैनिकोंको भगाकर पौण्ड्रकको युद्धके लिये ललकारना और पौण्ड्रककी गर्वोक्ति १०२७
- ९६-पौण्ड्रक और सात्यकिका युद्ध १०२९
- ९७-सात्यकि और पौण्ड्रकका युद्ध १०३२
- ९८-बलभद्र और एकलव्यका युद्ध तथा बलभद्र-द्वारा निषादोंका संहार १०३३
- ९९-बलभद्र और एकलव्यका तथा पौण्ड्रक और सात्यकिका युद्ध १०३५
- १००-श्रीकृष्णका द्वारकामें आगमन और पौण्ड्रकसे उनकी बातचीत १०३६
- १०१-पौण्ड्रक और श्रीकृष्णका युद्ध तथा पौण्ड्रक-का वध १०३९
- १०२-एकलव्यका द्वीपान्तर-गमन, भगवान् श्रीकृष्णका यादवोंको अपनी यात्राका संक्षिप्त वृत्तान्त बताना तथा अन्तःपुरमें रक्षिणी और सत्यभामासे मिलकर उन्हें संतोष देना १०४०
- १०३-हंस और डिम्भकके विषयमें जनमेजयका प्रश्न १०४२
- १०४-राजा नृहदत्तको भगवान् शङ्करकी आराधनासे हंस और डिम्भक नामक पुत्रोंकी प्राप्ति तथा राजसखा विप्रवर मित्रसहको भगवान् विष्णुकी उपासनासे जनार्दन नामक पुत्रका लाभ १०४३
- १०५-हंस और डिम्भककी तपस्या, वरप्राप्ति, जनार्दन-सहित उन दोनोंका विवाह तथा तीनों कुमारों-की धर्मनिष्ठा १०४४
- १०६-हंस और डिम्भककी मृगया १०४६
- १०७-सेनासहित हंस और डिम्भकका बुध्कर-तटपर विश्राम, महर्षि कश्यपके वैष्णवसूत्रका दर्शन तथा दुर्वास आदि यतियोंके समुदायमें जाकर उनके प्रति अपनी अश्रद्धाका प्रदर्शन १०४७

- १०८-हंस और डिम्बकद्वारा संन्यासकी निन्दा तथा
जनार्दनद्वारा संन्यास-आश्रमका मण्डन १०४९
- १०९-दुर्वासाका रोष, हंसद्वारा उनका तिरस्कार,
दुर्वासाद्वारा उन दोनोंके लिये श्राप और
जनार्दनके लिये वरदान १०५०
- ११०-दुर्वासा आदि मुनियोंका द्वारकागमन १०५२
- १११-श्रीकृष्णकी शोलक्रीडा, सुघर्मा समामें दुर्वासा
आदि मुनियोंका आगमन तथा यादवों और
श्रीकृष्णद्वारा उनका सत्कार, श्रीकृष्णका उनसे
वहाँ आनेका कारण पूछना और दुर्वासाका
भगवान्‌की स्तुति एवं उपालम्भपूर्वक उनके
प्रश्नका प्रतिवाद करके अपनी दुर्दशाका
वृत्तान्त सुनाना १०५३
- ११२-भगवान्‌ श्रीकृष्णकी हंस और डिम्बकके वधके
लिये प्रतिज्ञा तथा क्षमा-प्रार्थनापूर्वक उनका
यतियोंकी भोजन कराना १०५८
- ११३-जनार्दनका हंसको समझाना; किंतु हंसका
उनकी बात न मानकर उन्हें बूत बनाकर
द्वारकाको भेजना १०५९
- ११४-जनार्दनकी भगवद्दर्शनविषयक सत्कण्ठा १०६१
- ११५-जनार्दनका सुघर्मा-समामें जाकर भगवान्‌
श्रीकृष्णके दर्शनसे संतुष्ट हो उनकी आज्ञासे
भगवत्स्तवनपूर्वक हंस और डिम्बकका संदेश
सुनाना और उसे सुनकर यादवोंका उपहास
करना १०६४
- ११६-श्रीकृष्णका जनार्दनको संदेश देकर लौटाना १०६७
- ११७-सात्यकिसे हंस जनार्दनका आश्रमगमनमें जाना,
हंससे मिलना तथा हंसका जनार्दनसे कार्य-
सिद्धिके विषयमें पूछना १०६७
- ११८-जनार्दनका हंसको श्रीकृष्णदर्शनजनित अपना
उल्लास बताना, द्वारकामें हंसके संदेशकी
प्रतिक्रियाका वर्णन करके उसे राजसूय न
करनेकी सलाह देना, हंसका उसे रोषपूर्वक
तिरस्कार करके चले जानेके लिये कहना,

- फिर सात्यकिका हंसको श्रीकृष्णका संदेश
सुनाते हुए फटकारना १०६८
- ११९-हंस और डिम्बकके सात्यकिसे प्रति रोषपूर्ण
वचन तथा सात्यकिका उन्हें वैसा ही उत्तर
देकर द्वारकाको प्रस्थान १०७२
- १२०-भगवान्‌ श्रीकृष्ण तथा यादवसेनाका पुष्कर-
तीर्थमें जाकर हंस और डिम्बककी प्रतीक्षा करना १०७३
- १२१-हंस और डिम्बककी सेनाओंका पुष्करतीर्थमें
प्रवेश १०७५
- १२२-उभयपक्षकी सेनाओंका घमासान युद्ध १०७७
- १२३-श्रीकृष्ण और विचक्रका घोर युद्ध तथा
विचक्रका वध १०७८
- १२४-हंस और बलभद्रका युद्ध १०८०
- १२५-सात्यकि और डिम्बकका युद्ध १०८१
- १२६-हिडिम्बके साथ बसुदेव और उग्रसेनका युद्ध
तथा बलभद्रके द्वारा हिडिम्बका वध १०८३
- १२७-गोवर्धन पर्वतके समीप हंस और डिम्बकके
साथ यादवोंका युद्ध, श्रीकृष्णद्वारा भूतेश्वरोंकी
पराजय तथा श्रीकृष्ण और हंसका घोर युद्ध १०८६
- १२८-श्रीकृष्णद्वारा हंसका वध १०८९
- १२९-डिम्बककी आत्महत्या १०९०
- १३०-गोप-गोपियोंसहित यशोदा और नन्दका
गोवर्धन पर्वतपर आकर श्रीकृष्ण और
बलभद्रसे मिलना १०९१
- १३१-द्वारका जाते हुए श्रीकृष्णका पुष्करमें ऋषियोंसे
मिलना तथा ऋषियोंद्वारा उनका स्तवन १०९२
- १३२-महाभारत और हरिवंशके श्रवणकी विधि और
फल, वाचकके गुण, प्रत्येक पर्वपर दान देने
योग्य वस्तु, एकसे लेकर दस पारणाओंकी
महत्ता तथा महाभारत एवं हरिवंशका
माहात्म्य १०९३
- १३३-त्रिपुर-वधकी कथा ११०६
- १३४-हरिवंशमें वर्णित वृत्तान्तोंका संग्रह ११०५

१३५-हरिवंश-श्रवणकी दक्षिणा, फल एवं माहात्म्यका

वर्णन

*** ११०७

श्रीहरिवंश-माहात्म्य

१-हरिवंश-श्रवणका माहात्म्य, नारीके पाँच दोष
और हरिवंश-श्रवणसे उनकी निवृत्ति, पाठके

उत्तम, मध्यम आदि भेद तथा गोव्रतकी विधि ११०९

२-(१) हरिवंश-श्रवणकी विधि और फल *** ११११

३-(२) हरिवंश-श्रवणकी विधि और फल *** १११४

४-नवाव्रती श्रोताओंके पालन करने योग्य

नियम, उनके द्वारा ज्याज्य वस्तुओंका उल्लेख,

न्यायविषय कथा-श्रवण करनेवालोंकी दुर्गति,

कथामें विघ्न डालनेके कारण एक नारीको नरक-

यातना एवं राक्षसयोनिकी प्राप्ति तथा श्रोताओं-

के चौदह भेद

*** १११६

५-हरिवंशके नवाह-पारायणका उद्यापन, उत्तम किये

जानेवाले दान, पुस्तक-पूजा और वाचकपूजन

आदिका विधान एवं माहात्म्य

*** ११२१

६-हरिवंश आरम्भ करनेके लिये उत्तम मास, तिथि,

नक्षत्र आदिका निर्देश, देवपूजन, व्यासपूजन

तथा कथा-समाप्तिपर दी जानेवाली दक्षिणा एवं

दान आदिका उल्लेख तथा श्रवणका माहात्म्य ११२४

(संतानगोपाल-मन्त्रविधि)

१-संतानगोपालमन्त्रविधि: (१) *** ११२९

२-संतानगोपालमन्त्र (२) *** ११२९

३-सनस्कृतमारोक्त संतानगोपालमन्त्र (३) *** ११३०

४-संतानगोपालस्तोत्रम् *** ११३२

५-श्रीविष्णुशतनामस्तोत्रम् *** ११३९

६-वन्ध्यानां पुत्रोत्पत्त्यर्थं संतानगोपालमन्त्रविधि: ११४०

